जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम
श्रमण परम्परा और समसामयिक मूल्य
Certificate Course in
Shramana Tradition and Contemporary values

नोटः : यह प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के अन्तर्गत उपलब्ध संसाधनों के अनुसार संचालित होगा। यह अंशकालिक पाठ्यक्रम है। यह पाठ्यक्रम पूर्व की भाँति सत्र 2021–22 से पुनः प्रारम्भ होगा। इसमें अधिकतम 30 विद्यार्थी प्रवेश ले सकेंगे। न्यूनतम प्रवेश योग्यता 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण रहेगी।

यह पाठ्यक्रम कुल लगभग 70 कालांशों में पूरा होगा। इसमें एक प्रश्नपत्र 100 अकों का होगा, जिसमें उत्तीर्णांक 40 होंगे। इस प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में निम्नांकित प्रमुख बिन्दुओं का अध्ययन/शिक्षण किया जाना अपेक्षित है।

इकाई–प्रथम

1. श्रमण एवं वैदिक परम्परा का परिचय
2. श्रमण एवं जैन परम्परा का परिचय
3. श्रमण एवं बौद्ध परम्परा का परिचय

इकाई–द्वितीय

4. जैन परम्परा में विकसित प्रमुख मूल्य
5. बौद्ध परम्परा में विकसित प्रमुख मूल्य
6. श्रमण परम्परा का प्रमुख साहित्य

इकाई–तृतीय

7. पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष)
8. अष्टांगिक मार्ग
9. पंचशील एवं रत्नत्रय
10. धम्मपद (प्रथम एवं द्वितीय यमक–अहिंसा वग्ग एवं अप्रमाद वग्ग)

इकाई–चतुर्थ

11. समता और समानता
12. स्वतन्त्रता और मानवाधिकार
13. अहिंसा और अपरिग्रह (संविभाग)
14. वज्जालग्गं (सोयार वज्जा एवं सज्जण वज्जा)

इकाई–पंचम

15. सापेक्षवाद और अनेकान्तवाद
16. मानवतावाद और सामाजिक समानता
17. कर्मवाद का वैयक्तिक चिन्तन

Scanned with OKEN Scanner

सदर्भ ग्रन्थः–

1. जैनधर्म – पं डॉ. कैलाशचन्द्र जैन
2. जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तलनात्मक अध्ययन – डॉ. सागरमल जैन
3. बौद्ध दर्शन मीमांसा– डॉ. बलदेव उपाध्याय
4. बौद्धधर्म और भारतीय दर्शन– आचार्य नरेन्द्रदेव
5. पालि साहित्य का इतिहास– डॉ. भरतसिंह उपाध्याय
6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री
7. भारतीय जीवन मूल्य-- डॉ. गोविन्दचन्द्र पाण्डेय, जयपुर
8. जिनवाणी (जयपुर) का अहिंसा और अपरिग्रह विशेषांक।
9. धम्मपद सम्पादक–डॉ. सत्य प्रकाश शर्मा, साहित्य भण्डार, मेरठ
10. वज्जालग्ग (सोयार वज्जा एवं सज्जण वज्जा) चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी

Scanned with OKEN Scanner